Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

वर्तमान समय का तज़क़िरा : अवधूत कापालिकों का मार्ग तथा अन्य कविताएँ

[1]डॉ.अरुण कुमार निषाद

[1]सहायक प्रोफ़ेसर (संस्कृत विभाग) मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकखानपुर, द्वारकागंज, सुल्तानपुर।

कृति-अवधूत कापालिकों का मार्ग तथा अन्य कविताएँ (संस्कृत से हिन्दी काव्यानुवाद) रचनाकार-डॉ.कौशल तिवारी प्रकाशन-पुस्तकनामा प्रकाशन डी-77/एसएफ-202, शौर्यपुरम्, नजदीक जिन्दल पब्लिक स्कूल,एनएच-24, बम्हेटा, पोस्ट-कविनगर, गाजियाबाद-201002 उ.प्र. प्रथम संस्करण-2025 ई. अंकित मूल्य -250 रूपया प्रतियाँ -100 पृष्ठ संख्या-156

ISBN : 978-93-48789-33-4

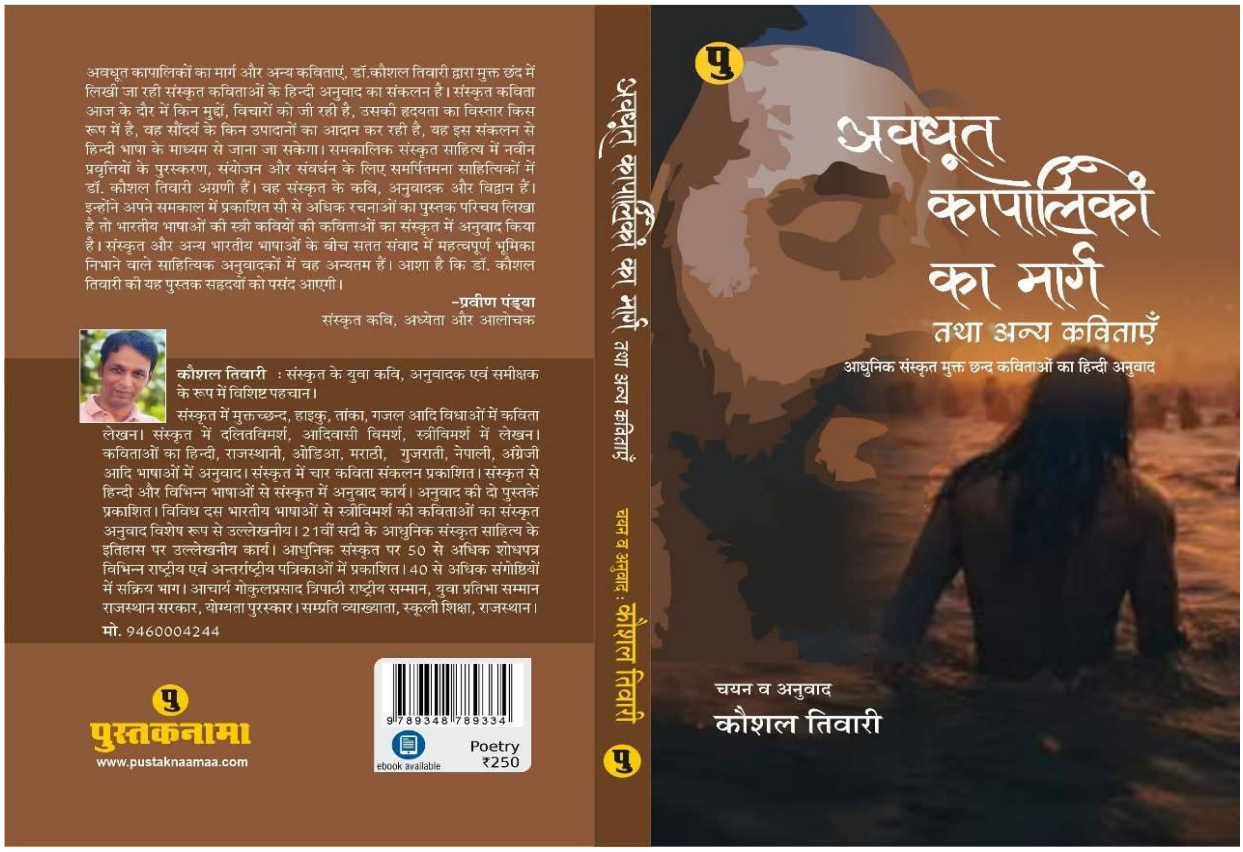

यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो उसमें समाज का अक्स (चित्र) भी नज़र आना (दिखाई देना) चाहिए | वह साहित्य पुस्तकालय की आलमारियों की ही शोभा बढ़ाता है, जिसमें अपने समय और समाज का चित्रण नहीं होता है | डॉ.कौशल तिवारी संस्कृत साहित्य के नदीष्ण विद्वान् हैं, वे अपने गीत, ग़ज़ल, नवगीत, समालोचना और अनुवाद के माध्यम से साहित्य जगत में पर्याप्त चर्चित हैं | अभी हाल ही में डॉ.तिवारी का एक मुक्तछन्द संस्कृत कविताओं का एक अनुवाद काव्यसंकलन 'अवधूतकापालिकों का मार्ग तथा अन्य कविताएँ' नाम से प्रकशित हुआ है | इसमें 17 कवियों (प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी,

Received **12 August 2025**; Accepted **22 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

डॉ.हर्षदेव माधव, डॉ.देवदत्त भट्टि, प्रो.अरुण रञ्जन मिश्र, डॉ.प्रफुल्ल के.मिश्र, डॉ.लक्ष्मी नारायण पाण्डेय, डॉ.प्रवेश सक्सेना, डॉ.रीता त्रिवेदी, डॉ.सरोज कौशल, डॉ.प्रमोद कुमार नायक, प्रो.बनमाली बिश्वाल, प्रो.नारायण दाश, डॉ.प्रवीण पण्ड्या, डॉ.पराम्बा श्री योगमाया, डॉ.ऋषिराज जानी, नितेश व्यास और डॉ.कौशल तिवारी) की 73 कविताएँ हैं |

इस काव्यसंकलन में हमें जीवन दर्शन की कविताएँ, समाज की बिगड़ती स्थिति की कविताएँ, स्त्रीविमर्श की कविताएँ, भक्तिपरक कविताएँ, प्रेमाभिव्यक्ति की कविताएँ, महानगरीय जीवन की कविताएँ, मनोवैज्ञानिक कविताएँ, नारी चेतना की कविताएँ, प्राचीन आख्यानपरक कविताएँ, वर्तमान राजनीतिक विद्रूपता की कविताएँ, सती प्रथा, भष्टाचार, आदिवासी और दलित विमर्श की कविताएँ, वेदना और निराशा की कविताएँ, पढने को मिलती हैं | इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

'आज की नायिका' नामक कविता में आचार्य प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी लिखते हैं कि आज की नायिका के पास इतना समय नहीं है कि वह सजे संवरे | उसकी ज़िन्दगी तो मशीनी ज़िन्दगी बन कर रह गयी है | वे लिखते है- नहीं निहारती वह देर तक /आईने में अपने रूप को/ प्रिय के उपभोग के चिह्न/ नखक्षत, दन्तक्षत को/ देखती हुई |...../वह तो खुद निकलती है/उड़े रंग के चेहरे के साथ /रात की पारी खत्म कर के/किसी कालसेंटर से (पृष्ठ 41-41) | डॉ.हर्षदेव माधव की कविता 'बूढ़ी माँ की पुकार' में एक वृद्धा की पीड़ा है | जिसके बहू, बेटे पोते के पास समय नहीं है कि दो चार बातें उसके साथ कर ले | नौकरानी तक उसकी बात नहीं सुनती | आधुनिकता के मोह में डूबा युवा पारम्परिक जीवन मूल्यों, आस्था तथा रीति-रिवाज़ों आदि के प्रति उदासीन बन रहा है | वृद्धों को निष्प्रयोज्य सामग्री समझकर घर के किसी कोने तक सीमित कर दिया जा रहा है | अधिकतर वृद्ध उपेक्षा और एकाकीपन का शिकार हो रहे हैं | बूढ़ी माँ पुकारती है/ यमराज को/किन्तु चली आती है/नई बीमारी (पृष्ठ 43)| प्रो.अरुण रञ्जन मिश्र की कविता 'तुम्हारे बिना' स्त्री मन की पीड़ा को बताती है | डॉ.लक्ष्मी नारायण पाण्डेय अपनी कविता 'हे राजन्!' में लिखते हैं कि- मेरी सहानुभूति हांशिए के लोग के प्रति है जो मूलभूल सुविधाओं से वंचित रह गए हैं | डॉ.प्रवेश सक्सेना की कविता 'आजादी का दिन' जहाँ एक ओर वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को दिखाता है, वहीं उनकी 'प्रश्न' कविता आज के वर्तमान दाम्पत्य जीवन पर सवाल खड़ा करती है | चिथड़ों से ढके हुए अतिसाधारण लोग/ इस आजादी की रात में/ इस लाल किले के सामने/ सोयेंगे फुटपाथ पर/ पहले के जैसे ही (पृष्ठ 84) | फेंक दिया तुमने/ तन्दूर में/ यह तो किया तुमने /बिलकुल नया ही/अन्तिम संस्कार (पृष्ठ 85) | डॉ.प्रवेश सक्सेना की एक अन्य कविता (त्रासदी) का भी अनुवाद डॉ.कौशल तिवारी ने किया है जो कि भ्रूणहत्या पर है | डॉ.प्रमोद नायक ने अपनी कविता 'सेठों का सूअर' में अमीरी और गरीबी के भेद को दिखाया है | सेठों का सूअर भी /होता है सबका सम्मानीय/ सामाजिकों का आदरणीय/गरीब होता है/सबका साला/हँसी का पात्र (पृष्ठ 96) | समकालीन कवियों ने अपनी भावभूमि का चयन स्वयं किया है | परिवार, परिवेश सामाज देश राष्ट्र के साथ-साथ तेजी बदलती हुई परिस्थितियों पर कवियों बड़ी ही गहराई से अपनी दृष्टि डाली है और उसे अपनी चेतना से उतारा है | कवि के अनुभव की व्यापकता के कारण ही उसकी लेखनी भी नए-नए आयाम स्थापित करती है | इनकी 'आत्मप्रतिष्ठा' कविता में भी आज की भ्रष्ट राजनीति दिखती है (पृष्ठ 98-99) | सती की आज क्या परिभाषा है इस बात पर प्रो.बनमाली बिश्वाल प्रश्न खड़ा करते हैं | प्रो.नारायण दाश ने स्कूलों में दोपहर के समय मिलने वाले मध्याह्न भोजन (मिड डे मील) के भ्रष्टाचार पर प्रश्न किया है | वे

Received 12 August 2025; Accepted 22 September 2025. Available online: 30 September 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

लिखते हैं कि- सारे भारत देश में/ सौ करोड़ से अधिक नरवीर/खाते हैं, पैदा होते हैं, पैदा करते है/पतंगे या कीड़े,.....मामा के घर जाने के कारण /अनुपस्थित छात्रों के नाम से/भोजन ले लेता है शिक्षक /अपने बच्चों के लिए (पृष्ठ 104) | डॉ.कौशल तिवारी 'बलात्कार' कविता में एक ऐसी स्त्री की मनोदशा को दिखाते हैं जिसका बलात्कार हुआ तो एक बार है पर लोग की निगाहें उसे दिन प्रतिदिन अपना शिकार बना रही होती है | बलात्कार के बाद/ घर लगता है/श्मशान सा ....बलात्कार के बाद/होता है वास्तविक बलात्कार/प्रतिदिन,प्रतिक्षण/ आत्मा का (पृष्ठ 152-153) |

इस काव्यसंकलन की सभी कविताएँ पाठकों के लिए सुपठनीय और सुग्राह्य हैं | निष्कर्षत: यह कहना समीचीन होगा कि पाठकवर्ग अग्रजवर्य डॉ.कौशल तिवारी के इस काव्यसंकलन को न केवल हाथों–हाथ लेगा, बल्कि उसका प्रशंसक भी बनेगा |

Received **12 August 2025**; Accepted **22 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License